सम्मेलन पत्रिका

(शोध–त्रैमासिक)

भाग : १०६ संख्या ६

अश्विन–मार्गशीर्ष : संवत् २०७९

जनवरी–मार्च : सन् २०२२

प्रधान संपादक

विभूति मिश्र

सम्पादक

रामकिशोर शर्मा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

१२ सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज–३

अश्विन–मार्गशीर्ष : संवत् २०७९

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	आलेख	लेखक	पृ०सं०
१.	श्रीअरविन्द : मोक्ष का ज्योतिर्मय स्वरूप	डॉ० मनीषा श्रीवास्तव	१-४
२.	भोजपुर जिले में पर्यावरण एवं संसाधन : एक भौगोलिक अध्ययन	मनोज कुमार सिंह	५-१२
३.	मौर्योत्तर युगीन स्त्रियों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक अधिकार	पूजा सिन्हा	१३-१६
४.	चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ	डॉ. सत्य प्रकाश चतुर्वेदी	१७-१९
५.	तुलसी की सामाजिक चेतना का यथार्थ	डॉ. सौरभ सिंह विक्रम	२०-२३
६.	पूर्वोत्तर जनजातियों का इतिहास, दर्शन, साहित्य एवं संस्कृति अरुणाचल प्रदेश के विशेष, संदर्भ में	डॉ० सत्य प्रकाश पाल डॉ० नरेन्द्र सिंह	२४-२८
७.	सिनेमा के बदलते परिदृश्य और नारी	संजय कुमार सिंह	२९-३२
८.	Gandhian Concept of Non Violence in Reference to Social Change	Nand Kishor Yadav	३३-३५
९.	COMPARISON OF SPEED BETWEEN BADMINTON AND LAWN TENNIS PLAYERS	Dr.Subodh Singh	३६-३८
१०.	Current scenario of wildlife tourism in Uttar-Pradesh and Uttrakhand	Km. Poonam Chaurasia	३९-४३
११.	नेपाल-चीन सम्बन्ध : भारतीय सुरक्षा को खतरे	किरन प्रकाश डॉ रितेश कुमार चौरसिया	४४-४९
१२.	प्राचीन मुद्राओं पर अंकित केश विन्यास आभूषण व दैनिक उपयोग की वस्तुएँ : एक अध्ययन	मनीषा	५०-५४

✷

प्राचीन मुद्राओं पर अंकित केश विन्यास आभूषण व दैनिक उपयोग की वस्तुएँ : एक अध्ययन

मनीषा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर, हरियाणा

हमारी संस्कृत साहित्य केश सज्जा की विभिन्न शैली के विस्तृत विवरण की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। मुख की शोभा वृद्धि के लिए विभिन्न प्रकार के प्रसाधनों के उपयोग की परम्परा आदि काल से ही समाज में विद्यमान रही है। केश विन्यास स्त्री व पुरुष के वेशभूषा का अनिवार्य अंग था। पाणिनी की अष्टाध्यायी[1] में इसे 'केश वेश' की संज्ञा प्रदान की गयी है।

विदेशी शासकों एवं देवताओं के केश – विन्यास

पुरुष अपनी इच्छानुसार लम्बे व छोटे केश रखते थे। कुषाण काल में केशों की सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। मिलिन्दपण्डों[2] में इसके स्वच्छता, स्वरूप, विशेष क्रियाकलापों की जानकारी दी गयी है। केश–विन्यास को तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **घुंघराले बाल :–** एन्टिमेकस – डायोडोटसं, एन्टिमेकस–यूथिडेमस, अगाथाक्लिज, डायोडोटस, अगाथाक्लिज– यूथिडेमस की मुद्रा में शासकों के बाल घुंघराले है। वोनोनीज– स्पलगदभ्, वोनोनीस–स्पलहोर, स्पलरिस–एजेज I, मावेस –माकेनीज की मुद्रा में जीयस के केश घुंघराले मुद्रांकित है। हिन्द–यवन शासकों के बाल घुंघराले व छोटे दर्शाये गये हैं। ध्यातव्य है कि घुंघराले बाल रखने की परम्परा यूनान में ज्यादा प्रचलित थी।
2. **सीधे सँवरे बाल** :– यूक्रेटाइडिज की 'हेलियोक्लिज– लाउडिके' 'स्ट्रेटा I अगाथाक्लिया, स्ट्रेटो I, स्टेट–II, हरमेयस कैलियोप– अर्थेग्नीज गोण्डोफर्नीज एवं गुद, गोण्डोफर्नीज – सस की मुद्रा में शासिका व को छोटे व सीधे बाल रखे हुए दर्शाया गया है।
3. **लम्बे बाल :–** स्पलरिस– स्पलगद्म की मुद्रा में हेराक्लिज के बाल खुले हुए है। शक–पह्लव, कुषाण एवं परवर्ती कुषाण/कबायली कुषाण शासकों की अधिकांश मुद्राओं पर राजपुरुषों की टोपी हेलमेट, मुकुट धारण किए प्रदर्शित किया गया है। जिसमें इनके सिर के पीछे निकले बाल स्वछंद रूप से लहरा रहे है। अगाथाक्लिज की स्मारक मुद्रा में सिकन्दर के माथे के पीछे की ओर खिंचे हुए उर्ध्वाधर लम्बे बालों के साथ दर्शाया गया है।

इसके अतिरिक्त कनिष्क III एवं वासुदेव II की मुद्रा में शिव के बालों को सिर के दोनों ओर लटकते हुये जटाओं के रूप में दर्शाया गया है। इसमें कभी–कभी जूड़े का भी अंकन दिखाई पड़ता है। गद्हर–किदार मुद्रा में शासक के सिर के पीछे जूड़े जैसी आकृति अंकित है। वर्तमान समय में साधुओं द्वारा भी जटा जूट धारण किया जाता है।

4. **दाढ़ी व मूँछ** :– बालों के साथ – साथ पुरुषों के व्यक्तित्व को संवारने के लिए दाढ़ी एवं मूँछों को संवारने की भी प्रथा थी। इन मुद्राओं के क्रम में जिन भी मुद्राओं पर जीयस का अंकन है उसमें जीयस को दाढ़ीयुक्त दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त स्ट्रेटो I, स्ट्रेटो–II, वोनोनीज–स्पलगदम्, स्पलरिस–एजेज–I, अथेग्नीज– गोण्डोफर्नीज एवं गुद की मुद्राओं पर शासकों की मूँछों के साथ हल्की लम्बी दाढ़ी का अंकन है। इसमें दाढ़ी को नीचे की ओर कोण बनाते हुए अंकित किया गया है। जिन शासकों की मुद्रा में शासकों को बिना मूँह–दाढ़ी के साथ अंकित किया गया है। उससे यह प्रतीत होता है कि अपनी दाढ़ी व मूँछो को हटाने के लिए सम्भवतः वे कर्तनी का प्रयोग किया करते होंगे।

चित्र–1

देवियों व स्त्रियों के केश– विन्यास :– स्त्रियों के केशों के समूह को 'कैश्य' या 'कैशिक' कहते थे। घुंघराली लटों को 'प्रागुल्फा' कहा जाता था। स्त्रियों के अकसर घुंघराले केश नहीं दिखाई पड़ते है। लेकिन कुछ उदाहरणों में जैसे– मोहनजोदड़ों से मिली एक खण्डित मुखाकृति में घुंघराले केश पीछे की ओर लटक रहे है।[3] मौर्योत्तर कालीन साहित्य में नारी के केश–सज्जा के छिट–पूट उदाहरण मिलते है।[4] इन मुद्राओं में पल्लस के बाल कई जगहों पर खुले हुए दिखाई पड़ते हैं। कुजुल कैडफिसेस–हरमेयस की मुद्रा में नीके के पीछे जूड़े का अंकन किया गया है। अगाथाक्लिया स्ट्रेटो– I की मुद्रा में अगाथाक्लिया को एकल द्विवेणी तथा वेणी चोटियों के साथ प्रदर्शित किया गया है। इसमें अगाथाक्लिया के बालों को संवारकर पीछे की ओर चोटी (वेणी) बनायी गयी है, जो नीचे की ओर लटकी हुयी है। आज भी इस प्रकार की चोटी बनाने का प्रचलन है।

चित्र–2

आभूषण :– प्रसाधन सामग्री में वस्त्रों के साथ–साथ आभूषणों का विशेष महत्व है। आभूषण सुसंस्कृत समाज में मानवीय श्रृंगारिकता में व्यक्तित्व विकास हेतु वर्तमान में एक प्रमुख अवयव माने जाते है। समाज में आभूषण धनी–निर्धन के विभाजन का परिचायक भी है। इसकी प्राचीनता सैन्धव[5] व वैदिक

काल[6] तक जाती है। प्राचीन मुद्राओं पर स्त्री एवं पुरुष दोनों को शीर्षपट्ट एवं शीर्ष आभूषण, ग्रीवाभूषण, भुजबन्ध, कर्णाभूषण, बाहु आभूषण, कटि आभूषण पहनें हुए दर्शाया गया है। जिसका विवरण निम्नवत है–

1. **शीर्षाभूषण (अग्रपट्ट) :–** प्राचीन साहित्य में इसके कई नाम मिलते है जैसे किरीटपट्ट[7] केशों को माथे पर आने से रोकने के लिए यह सौन्दर्य वृद्धि की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। मुद्राओं पर यह मोती निर्मित ललाटपट्ट या अग्रपट्ट पर धारण किए जाते थे। हिन्द, यवन, शक शासकों की मुद्राओं पर ये दूसरे स्वरूप में दिखाई पड़ते हैं। कुषाण शासक कनिष्क III, वासुदेव II, मही तथा परवर्ती कुषाण। कबायली कुषाण (गदहर) आदि शासकों के सभी मुद्रा पर आर्दोक्षों की शीर्ष पर सुसज्जित अग्रपट्ट को मोती जड़ित रूप में अंकित किया गया है। ये अलंकरणात्मक प्रतीक धीरे–धीरे राजकीय लक्षण बन गये थे। शीर्षपट्टों की ही भांति इन कुषाण व परवर्ती कुषाण शासकों की मुद्रा पर शीर्षमुकुट भी मोती जड़ित थे तथा ये उच्चवर्गीय पहचान के प्रतीक माने जाते थे।
2. **कर्णाभूषण :–** भारतीय परम्परा में संस्कारों की श्रृंखला में कर्णछेदन एक विशेष संस्कार के रूप में जाना जाता है। कुषाण शासकों में कनिष्क III, वासुदेव II, परवर्ती कुषाण/कबायली कुषाण शासकों की मुद्रा व चन्द्रगुप्त प्रथम व कुमार देवी प्रकार की मुद्रा में राजा (चन्द्रगुप्त प्रथम) को कान में लम्बें लटकन धारण किये प्रदर्शित किया गया है। चन्द्रगुप्त–प्रथम व कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा में कुमारदेवी को लटके हुए कुण्डल पहनें अंकित किया गया है। लटकने वाले इस कुण्डल को अश्वघोष ने सौन्दरानन्द में 'साँची कृत कुण्डलेन' कहा है।[8] दिद्दा, क्षेम व मुहम्मद–बिन–साम, पृथ्वीराज तृतीय की मुद्रा में लक्ष्मी को चिपटे हुए कर्णाभूषण पहनें दर्शाया गया है।
3. **ग्रीवाभूषण :–** स्ट्रेट– I, अगाथाक्लिया की मुद्रा में अगाथाक्लिया को गोल–गोल मोतियों की माला पहनें अंकित किया गया है। इसके अतिरिक्त वासुदेव II, मही, गोण्डोफर्नीज–गुद्द, गदहर–किदार, गदहर–समुद्र की मुद्रा में राजा को हार पहनें दर्शाया गया है। कई परवर्ती कुषाण मुद्रा में देवी आर्दोक्षों को भी हार पहने देखा जा सकता है। चन्द्रगुप्त प्रथम व कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा में राजा–रानी दोनों ही हार से सुसज्जित दिखलाये गये है। इसी मुद्रा के पृष्ठ भाग पर देवी को हार पहनें तथा दिद्दा–क्षेम एवं मुहम्मद–बिन–साम–पृथ्वीराज, तृतीय की मुद्रा में लक्ष्मी को हार पहनें अंकित किया गया है।
4. **कड़ा/भुजबन्ध :–** कुषाण/परवर्ती कुषाण/कबायली कुषाण शासकों की सभी मुद्रा पर राजा व देवी आर्दोक्षो को कड़ा पहनें हुए दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त कुणिन्द शासक अमोघभूति प्रजापति अख्यस की तथाकथिक मुद्रा में देवी को कड़ा पहनें तथा चन्द्रगुप्त प्रथम व कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा में राजा–रानी को भी कड़ा पहनें दिखलाया गया है। मुद्राओं पर ये बड़े व मोटे रूप में दिखाई पड़ रहे हैं। यह लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले सामान्य आभूषणोकं में से एक था। इनकी लोकप्रियता हड़प्पा संस्कृति के काल से ही जानी जाती है।[9] चन्द्रगुप्त–कुमारदेवी की मुद्रा में चन्द्रगुप्त को भुजबन्ध पहनें भी दर्शाया गया है। इस भुजबंद को 'अंगद' तथा 'केयूर' भी कहा जाता था। इसे स्त्री–पुरुष दोनों द्वारा धारण किया जाता था।
5. **कटि–आभूषण :–** कटि आभूषण के अन्तर्गत मेखला पेटी तथा करधनी को रखा जाता है। जिसे प्रायः स्त्रियाँ धारण करती थी पुरुषों द्वारा 'कटिसूतक' नामक आभूषण धारण किया जाता था। दिद्दा–क्षेम व मुहम्मद–बिन–साम पृथ्वीराज– III की मुद्रा में देवी लक्ष्मी को बिन्दुओं से युक्त अर्धचन्द्राकार मेखला पहनें हुए दर्शाया गया है। जो काफी उत्कृष्ठ बिंदूवर्तुल रूप में दृष्टिगत होते हैं।
6. **पाद–आभूषण** :– पाद आभूषण के अन्तर्गत पायल का उल्लेख किया जा सकता है। चन्द्रगुप्त प्रथम व कुमारदेवी प्रकार तथा अमोघभूमि – प्रजापति अख्यस की मुद्रा पर देवी को पायल (कड़ा या छड़ा) पहनें हुए प्रदर्शित किया गया है।
7. **बिन्दी :–** मुहम्मद–बिन–साम–पृथ्वीराज तृतीय की मुद्रा में देवी के मस्तक पर बिन्दी का अंकन किया गया है। जो बिन्दू रूप में दिखाई पड़ता है कुछ लोगों ने इसे मांगटीका (स्त्रियों द्वारा पहनें जाने वाला माथे का आभूषण) भी माना है।

इन शासक शासिकाओं, देवी–देवता द्वारा धारण किए गए आभूषण से समसामयिक काल में प्रयोग किए गए प्रसाधन आभूषण की जानकारी मिलती है। सम्भवतः सामान्य जन के लोगों द्वारा भी अपने सौन्दर्य वृद्धि में इन आभूषणों का प्रयोग किया जाता रहा होगा। ये आभूषण प्रायः स्वर्ण, रजत, बहुमूल्य मोती मणियों व नगीनों कीमती रत्नों से जड़ित होते रहे होंगे।

मुद्राओं पर अंकित दैनिक उपयोग की वस्तुएँ :– प्राचीन मुद्राओं के क्रम में मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं, जिन पर विभिन्न प्रकार के समसामयिक घरेलू उपकरण प्राप्त हुए है यथा–सिंहासन, सीढ़ी, चटाई, अंगीठी (दीपक), त्रिपाद लगाम इत्यादि। समाज के विविध आयामों तथा सामाजिक सम्पन्नता के प्रदर्शन तथा आरामदायक जीवन हेतु मनुष्य की लालसा ने इन अनगिनत वस्तुओं के सृजन को प्रेरणा प्रदान किया। मुद्राओं पर अंकित इन दैनिक उपयोगी उपकरणों का अध्ययन न केवल आज के लिए उपयोगी है। वरन् उस युग के लोगों के बौद्धिक विकास, सामाजिक स्तर को भी समझाने में काफी मददगार साबित होता है। इन मुद्राओं पर प्राप्त होने वाले विविध वस्तुओं का विवरण निम्न है।

1. **सिंहासन :–** प्राचीन भारतीय साहित्य में सिंहासन व आसन का उल्लेख किया गया।[10] हिन्द–यवन शासक अगाथाक्लिज–सिकन्दर की मुद्रा में जीयस को सिंहासन–रूढ़ दिखाया गया है। शक शासकों में मावेस–माकेनीज की मुद्रा में माकेनीज (रानी) को भी सिंहासन पर बैठे अंकित किया गया है। इन सिंहासनों में हाथ को रखने के लिए हत्थे बने दिखाई देते हैं। सिंहासन के पीठ पर दो उर्ध्वाधर छड़ों एवं शीर्ष के निकट एक क्षैतिजाकार छड़ द्वारा उनको आपस में जोड़ा गया है। इन सिंहासनों के पैर कही सादे तो कहीं–कहीं पैरों में गोल–गोल आकृति के गेंदों को उकेर कर बनाया गया है। कनिष्क III, वासुदेव II, तथा परवर्ती कुषाण/कबायली कुषाणों के सभी मुद्राओं पर देवी आर्दोक्षों को सिंहासन पर बैठे प्रदर्शित किया गया है। इस गद्दीदार सिंहासन की पीठ दो ऊर्ध्वाधर, छड़ों के मध्य में बटन समान आकृति बने हुए है। इन सिंहासनों के पैर गोल–गोल गेंद समान तथा पावे के नीचे का अर्ध भाग उल्टी घण्टी के समान है। ये अपनी कलात्मकता से ओत–प्रोत है।
2. **सीढ़ी :–** परवर्ती कुषाण शासकों की मुद्रा में आर्दोक्षो के बगल में सीढ़ी का अंकन दिखाई पड़ता है। श्री सातकर्णि एवं नागनिका की मुद्रा में भी सीढ़ी का अंकन दिखाई पड़ता है। सम्भवतः इस सीढ़ी का प्रयोग समसामयिक समाज में ऊपर (सोपान) चढ़ने के लिए किया जाता होगा।
3. **अंगीठी (दीपक)** :– एजेज I व एजिलाइजेज की मुद्रा में देवी को दीपक धारण किये दर्शाया गया है। दीपक का प्रयोग प्रकाश फैलाने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार अंगीठी के अंकन से समसामयिक काल में प्रकाश–व्यवस्था का पता चलता है।

चित्र–3

4. **चटाई :–** चन्द्रगुप्त प्रथम व कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा में देवी के पैर के नीचे मणियुक्त चटाई का अंकन किया गया है। इसके अतिरिक्त दिद्दा–क्षेम तथा मुहम्मद–बिन–साम–पृथ्वीराज तृतीय की मुद्रा पर भी देवी के पैर के पास चटाई को दर्शाया गया है। इस चटाई के अंकन से समसामयिक काल में चटाई के उपयोगिता व उसकी प्राचीनता पर भी प्रकाश पड़ता है। वर्तमान में इसको 'मैट' के रूप में जाना जाता है, जिस पर लोग अपने पैरो को रखते है, परन्तु आज के परिपेक्ष्य में देखे तो उस काल के ये चटाई काफी सुन्दर, मणियुक्त, नक्काशी युक्त होती थी। जबकि आज इनकी खुबसूरती उस प्रकार की नहीं होती है, जिस प्रकार की प्राचीन काल में दिखई पड़ रही है।
5. **लगाम :–** लगाम का प्रयोग पूर्ण रूप से तो दैनिक उपयोग में नहीं जाना जाता परन्तु शासकों द्वारा घोड़े को संचालित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाना यह दर्शाता है कि लोग इसका प्रयोग करते थे। शक–पह्लव शासकों के लगभग सभी मुद्राओं पर अश्वारूढ़ शासक को घोड़े के लगाम के साथ प्रदर्शित किया गया है। अश्व को नियंत्रित करने हेतु इसका प्रयोग किया जाता रहा होगा क्योंकि बिना लगाम के घोड़ा युद्धस्थल पर अनियंत्रित हो सकता था।

सन्दर्भ सूची :–

1. अष्टाध्यायी, 4,42
2. मिलिन्दपण्हों 11/11/10
3. मार्शल, जान; मोहनजोदड़ो एण्ड इण्डज सिविलाइजेशन, खण्ड–3, फलक 99, पृ0 1–3
4. श्रीवास्तव, रानी; कुषाण प्रस्तर मूर्तियों में समाज एवं धर्म, पृ0 57
5. राय, गोविन्दचन्द्र; स्टडीज इन द डेवलपमेंट ऑफ ऑर्नामेण्ट एण्ड ज्वेलरी इन प्रोटोहिस्टोरिक इण्डिया, फलक 10
6. राय, गोविन्दचन्द्र; स्टडीज इन द डेवलपमेंट ऑफ ऑर्नामेण्ट एण्ड ज्वेलरी इन प्रोटोहिस्टोरिक इण्डिया, फलक 10, पृ0 245–250
7. वारांङ्गचरितम् 18/64 किरीटहारांगद कुण्डलानिग्रीवोरुबाछूदरबंधनानि।
8. श्रीवास्तव, रानी; कुषाण प्रस्तर मूर्तियों में समाज एवं धर्म, पृ0 102
9. बाशम, आर्थर लेवलिन; द वन्डर दैट वॉज इण्डिया, पृ0 214
10. अल्तेकर, अनतं सदाशिव; बयाना होर्ड कैटलॉग, प्लेट XXVI, 14